HISTORY

B.A.(Hon's)PART-I

Paper-II (The Rise Of Modern West)

Unit-I (Movement and Revolution)

Dr. GUDDY KUMARI

(Guest Lecturer), History Deptt.

A.N.D. College, Samastipur

Lecture Series - 13

(इस PDF का Audio or videos देखने के लिए नीचे लिखे लिंक को follow करें ☐☐☐

https://youtu.be/53Z8-m0Kojc

◆ हेनरी अष्टम के शासनकल में इंगलैंड में हुए धर्म सुधार आंदोलन

अर्थात, हेनरी अष्टम के सुधार पार्लियामेंट के कार्य....

★ हेनरी अष्टम (1509-1547)ई.

हेनरी अष्टम 1509 ई. में पिता हेनरी सप्तम से विरासत के रुप में प्राप्त ब्रिटिश साम्राज्य का उत्तराधिकारी बना। वह पहला ट्यडर शासक था, जिसे गद्दी पर बैठने के समय विरोध का सामना नहीं करना पड़ा। उसने कुशलता पूर्वक मंत्रियों का चुनाव कर इंग्लैंड की राजनीति को नया मोड़ दिया। उसने 1509 से 1547 ई. तक शासन किया। उसके लंबे शासन काल को दो भागों में बाटा जा सकता है। प्रथम 20 वर्षों का समय विदेश नीति से संबंधित है। दूसरा भाग धर्म सुधार आंदोलन से संबंध है।अतः शासन के प्रथम भाग में राजा को वुल्जे जैसा योग्य प्रधानमंत्री मिला और दूसरे भाग में सुधार पार्लियामेंट की बैठक बुलाई गई जिसके तहत हेनरी अष्टम ने धर्म सुधार आंदोलन को बढ़ावा दिया। इसप्रकार शासन के दोनों भाग हेनरी अष्टम के तलाक के प्रश्न से प्रभावित थे।

★ हेनरी अष्टम एवं कैथराईन का तलाक का प्रश्न:- हेनरी अष्टम को कैथराइन से कोई पुत्र उत्पन्न नहीं हुआ था। अतः हेनरी उससे असंतुष्ट होकर दासी ऐन बोलीन से प्रेम करने लगा। वह

DR. GUDDY KUMARI (A.N.D. COLLEGE)

कैथराइन को तलाक दिये बिना ऐन बोलीन से विवाह नहीं कर सकता था। उसने पोप के पास तलाक का प्रस्ताव भेजा लेकिन पोप स्पेन के राजा चार्ल्स पंचम के भय से तलाक देने की आज्ञा में विलंब किया। अतः पोप के इस ढुलमुल नीति से हेनरी अष्टम की पोप के प्रति श्रद्धा घृणा में बदल गई और उसने पोप से क्षुब्ध होकर अन्य साधनों का सहारा लिया। उसने टॉमस केन्मर की सहायत से यूरोप के विश्वविद्यालय को आमंत्रित किया और इस प्रकार क्रेनमर ने उसे तलाक की अनुमति दे दी। तलाक के साथ ही हेनरी अष्टम का रोम के पोप से संबंध विच्छेद हो गया।

वुल्जे चर्च का समर्थक था। कैथराइन के तलाक के साथ ही वुल्जे का पतन हो गया। वुल्जे के स्थान पर टॉमस मूर चांसलर बना। उस समय चर्च के शोषण के विरुद्ध इंग्लैंड में कट्टरपंथी लोग धर्म सुधार की मांग कर रहे थे। इन अनुकूल परिस्थितियों में हेनरी ने नवम्बर 1529 ई. में पार्लियामेंट की बैठक बुलाई। लगभग 14 वर्षों से इंग्लैंड में पार्लियामेंट की बैठक नहीं बुलाई गई थी। यह पार्लियामेंट 7 वर्षों तक अधिवेशन में रही।इन 7 वर्षों के दौरान हेनरी और रोम के बीच भेदभाव बढ़ता गया और पार्लियामेंट द्वारा पोप एवं चर्च के व्यवस्था के विरोध में अनेक सुधार अधिनियम पारित हुए। इंग्लैंड के इतिहास में इसे 'सुधार पार्लियामेंट' या हेनरी अष्टम का 'धर्मसुधार आंदोलन' के नाम से भी जाना जाता हैं। जो इस प्रकार है:–

★ पादरियों पर राजा का अधिकार:– इंग्लैंड में चर्च के पास अपार धन था। वसीयत व्यापार और मृत्यु की फीस चर्च की आमदनी के मुख्य स्रोत थे। धर्म पत्रों की बिक्री से भी उसे आमदनी हो जाती थी। सुधार

पार्लियामेंट में सबसे पहले चर्च की जेब पर आक्रमण किया। राजा ने पार्लियामेंट की सहायता से चर्च की आय का स्रोत बंद कर दिया। राजा की आज्ञा के बिना अब कोई भी पादरी एक से अधिक वृति नहीं कर सकता था। वृति धारण का आदेश पहले पोप ही देता था, परंतु पादरियों को अपने अधिकार क्षेत्र में लाकर राजा ने उनकी सुविधाओं पर पहला वार किया।

★प्रिमेनाइर के नियमों(statutes of premunire) का उल्लंघन करने वालों पर जुर्माना:– सुधार पार्लियामेंट की दूसरी बैठक में पादरियों पर प्रिमेनाइर के नियमों का उल्लंघन करने का दोष लगाया गया। प्रिमेनाइर की व्यवस्था एडवर्ड तृतीय के समय इंग्लैंड में लागू की गई थी, जिसके अनुसार इंग्लैंड का मामला इंग्लैंड के अंदर ही निबटाने का निश्चय हुआ। परंतु वुल्जे ने कैथेराइन के तलाक का प्रश्न रोम के पोप के पास भेज कर नियमोल्लंघन किया था और पादरियों ने उसे पोप का दूत स्वीकार कर उसमें साथ दिया था। अंत में राजा ने सभी पादरियों को दोषी ठहराया और दोष स्वीकार कर लेने पर धन लेकर उन्हें दोषमुक्त कर दिया

DR. GUDDY KUMARI (A.N.D COLLEGE)

★1531 ई. में राजा चर्च का प्रधान घोषित:–1531 ई. पार्लियामेंट ने राजा को इंग्लैंड के चर्च और पादरियों का प्रधान एवं संरक्षक बनाने की घोषणा की। इस घोषणा से राजा चर्च और पादरियों का वास्तविक प्रधान हो गया। सभी पादरियों को आत्मसमर्पण के दस्तावेज पर हस्ताक्षर करने पड़े। जिसके अनुसार चर्च संबंधी कोई भी नियम बिना राजा की आज्ञा के तैयार नहीं किया जा सकता था।

★1532 ई. में अनेटस कानून(Act of Annates) पारित :– 1532 ई. में पार्लियामेंट द्वारा अनेटस कानून स्वीकार कर राजा ने पोप को लाभ का आंशिक दान देना बंद कर दिया। पादरी अथवा बिशप अब पोप को दान देने के बदले राजा को ही वह रकम देने लगे। जो विशप इस नियम का उल्लंघन करते थे, उनकी संपत्ति और भूमि छीन ली जाती थी। ऐसी परिस्थिति में यदि वह अपने बिशप का निर्वाचन नहीं कर पाते थे तो उनके दो सहकारी बिना पोप की आज्ञा के प्रतीक्षा किए विशप का निर्वाचन कर सकते थे। नए विधान के प्रयोग का अधिकार राजा की इच्छा पर छोड़ दिया गया। इस प्रकार रोम के पोप के साथ संबंध विच्छेद करने की दिशा में पहला कदम था।

★1533 ई. में अपीलों का एक विधान(Act of Appeals) पारित :– कैथरीन के तलाक की अपील को निष्फल करने के उद्देश्य से 1533 ई. में पार्लियामेंट ने अपीलों का एक विधान पारित किया। विधान के अनुसार वसीयतनामा विवाह तलाक आदि की अपील रोम के पोप के यहां नहीं भेजी जा सकती थी। इस प्रकार की अपील अब पादरियों की बड़ी सभा(Upper House of convocation) में की जाने लगी। जिस पर राजा का पूर्ण अधिकार था।

★ 1534 ई. में प्रथम राजकीय उतराधिकार कानून(First royal succession act) एवं प्रभुत्वविधान(Act of supremacy) पारित:–1534 ई. में पारित प्रथम राजकीय उतराधिकार कानून(First royal succession act) के अनुसार कैथेराइन के साथ हेनरी का विवाह अवैध घोषित कर उसकी पुत्री मेरी को राजगद्दी प्राप्त करने से वंचित कर दिया गया एवं 1534 ई. में पारित प्रभुत्वविधान के अनुसार राजा इंग्लैंड के चर्च का अध्यक्ष बना और पार्लियामेंट द्वारा स्वीकृत विधान को मानने तथा विदेशी अनुशासन को स्थापित करने की प्रतिज्ञा लोगों को लेनी पड़ी। जो व्यक्ति प्रतिज्ञा नहीं करते थे उन्हें कैद कर लिया जाता था।

★1536 ई. में संपन्न हुई पार्लियामेंट की सातवीं और अंतिम बैठक में छोटे छोटे मठों को बंद करने की घोषणा की गई। 200 से कम वार्षिक आय वाले सभी मठों की संपत्ति छीन ली गई और

DR. GUDDY KUMARI (A.N.D COLLEGE)

उन पर राजा का अधिकार हो गया। मठों की बर्बादी से संबंधित सारे अधिकार राजा के हाथ आगे।

निष्कर्ष तो हम कह सकते हैं कि सुधार पार्लियामेंट के कार्यों की विवेचना से दो बातें स्पष्ट होती है। प्रथमत: इंग्लैंड का धर्म सुधार आंदोलन मुख्यता राजनीतिक था। और धर्म सुधार आंदोलन के तहत चर्च में फैली अव्यवस्था समाप्त हो गई।

दूसरी बात यह है कि धर्म सुधार आंदोलन के तहत सुधार पार्लियामेंट ने पोप के प्रभुत्व को समाप्त कर राजा को इतना शक्तिशाली बना दिया, जितना कि ना तो वह पहले कभी था और ना बाद में हुआ। राजा के हाथ में सारी शक्तियां आ गई। चर्च की संपत्ति पर भी उसका अधिकार हो गया। इस प्रकार राजा सही अर्थ में देश का प्रधान हो गया था।

!!!!!!!!!!धन्यवाद!!!!!!!!!!

DR. GUDDY KUMARI (A.N.D COLLEGE)